दिलीप त्रिवेदी

16LEAVES

मुझे कुछ कहना है

मुझे कुछ कहना है

दिलीप त्रिवेदी

16LEAVES

पहला संस्करण, 2023

© दिलीप त्रिवेदी, 2023

इस प्रकाशन का कोई भी भाग लेखक की पूर्व अनुमति के बिना (संक्षिप्त उद्धरण के मामले को छोड़कर) पुनः प्रस्तुत, फ़ोटोकॉपी सहित किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से वितरित, या प्रसारित, रिकॉर्डिंग, या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक़ तरीके से नहीं किया जा सकता है। आलोचनात्मक समीक्षाओं और कुछ अन्य गैर वाणिज्यिक प्रयगों की कॉपीराइट कानून द्वारा अनुमति है। अनुमति के अनुरोध के लिए प्रकाशक को नीचे दिए गए पते पर लिखें।

यह पुस्तक भारत से केवल प्रकाशकों या अधिकृत आपूर्तिकर्ता द्वारा निर्यात की जा सकती है। यदि इस शर्त का उल्लंघन हुआ तो वह सिविल और आपराधिक अभियोजन के अंतर्गत आएगा ।

पेपरबैक आई एस बी एन: 978-81-19221-31-8
ईबुक आई एस बी एन: 978-81-19221-37-0
वेब पीडीऍफ़ आई एस बी एन: 978-81-19221-36-3

नोट: पुस्तक का संपादन और मुद्रण करते समय उचित सावधानी बरती गई है। अनजाने में हुई गलती की ज़िम्मेदारी न लेखक और न ही प्रकाशक की होगी।

पुस्तक के उपयोग से होने वाली किसी भी प्रत्यक्ष परिणामी या आकस्मिक नुकसान के लिए प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होंगे। बाध्यकारी त्रुटि, ग़लत प्रिंट, गुम पृष्ठ, आदि की सम्पूर्ण ज़िम्मेदारी प्रकाशक की होगी। ख़रीद की एक महीने के भीतर ही पुस्तक का (वही संस्करण/ पुनः मुद्रण) प्रतिस्थापन हो सकेगा।

भारत में मुद्रित और बाध्य
16Leaves
2/579, सिंगरवेलन स्ट्रीट
चिन्ना नीलांकारई
चेन्नई - 600 041
भारत

Info@16leaves.com
www.16Leaves.com
कॉल करें: 91-9940638999

आभार

यूँ तो समय-समय पर मेरे सभी दोस्त और परिचित मुझे अपनी कविताओं को प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित करते रहे हैं पर मैंने अब तक इसे कभी गम्भीरता से नहीं लिया था। मैं उन सभी मित्रों और शुभचिंतकों का शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में मुझे इस अभियान के लिए प्रेरित किया।

दो मित्रों का यहाँ पर ज़िक्र करना और उनका शुक्रिया अदा करना ज़रूरी है। एक तो है मेरा स्कूल का सहपाठी, गौतम सरकार, जिसने मेरे मन के किसी कोने में छुपी, दबी इस ख़्वाहिश को माचिस लगा कर भड़काया और मुझे अपनी कविताओं को सबके सामने लाने पर आमादा किया; और दूसरे, मेरे ही स्कूल के मेरे सीनियर श्री अरुण रॉय जिन्होंने मेरे आत्मविश्वास और लगन की कंपकंपाती लौ को अपनी मज़बूत हथेलियों से ढक कर महफ़ूज़ रखा, बुझने नहीं दिया। ये किताब अगर आज आपके हाथों में है तो इसका ज़्यादा श्रेय इन दो महानुभावों को जाता है।

इनके अलावा मै ख़ास तौर पर शुक्रगुज़ार हूँ श्री के. पी. एस. वर्मा साहब और श्रीमती सुषमा सक़्सेना जी का जिन्होंने बहुत धीरज के साथ इसे पढ़ा और अपने बेशक़ीमती मशवरे दे कर इसे बेहतर बनाने में मेरी अहम मदद की।

और मेरी शरीके-हयात रत्ना, जहाँ से मेरी हर बात शुरू होती है और वहीं पहुँच कर मुकम्मल होती है। मेरी हर कोशिश में उनका बेलौस साथ होता है और जिनकी मदद के बिना मेरा कोई काम पूरा नहीं होता।

अंत में मैं शुक्र गुज़ार हूँ, मेरे प्रकाशक 16Leaves और उनकी टीम का जिन्होंने ने इसे आप तक पहुँचाया। वर्ना ये गुमनामी के अंधेरे में ही खोयी रहतीं।

क्रम

1.	इबादत	1
2.	एक ख़्वाहिश	2
3.	सुबह	3
4.	ज़िंदगीनामा	5
5.	अल्फ़ाज़	7
6.	इमारतें	8
7.	एक इल्तिज़ा	9
8.	तर्ज़-ए-ज़िंदगी	10
9.	बुलबुला	11
10.	ग़ुरूर-ए-जवानी	12
11.	जाविदां कहानी	13
12.	ख़्वाब	14
13.	उम्मीद	15
14.	जुस्तजू	16
15.	हौसले	17
16.	कदम उठा के तो देखो	18
17.	छांह न ढूँढो	19
18.	पसीना	20
19.	जुलूस	21
20.	आराइशे शहर	23
21.	आँखों में जलन	24
22.	बदलाव	25
23.	आईना	26

24. आज का चलन 28
25. नया सबेरा 29
26. आया चुनाव 31
27. प्रजातंत्र की जयजयकार 33
28. जम्हूरियत 34
29. एक गुज़ारिश 38
30. अपने किस्से, अपने फ़साने 40
31. आलमे जुल्मत 41
32. शोला 42
33. क़त्ल का फ़रमान 43
34. आज का हिंदुस्तान 44
35. झुनझुना 45
36. गुरु दक्षिणा 47
37. इंतज़ार 52
38. रात 54
39. खिजां 56
40. गुज़रा ज़माना 57
41. सुबह भी तो होगी 58
42. यादें 59
43. लम्हों का सफ़र 60
44. रौशन रातें 61
45. चाँदनी रात 62
46. तुम हो 63
47. सदा 64
48. महबूब के नाम 65
49. ख़याल 66
50. पर तुम नहीं आयीं 67
51. मश्के सुख़न 69

दो शब्द

मजरूह सुल्तानपुरी साहब का एक शेर है:

'मजरूह लिख रहे हैं वो अहले वफ़ा का नाम
हम भी खड़े हुए हैं गुनहगार की तरह।'

मेरी भी कैफ़ियत कुछ-कुछ ऐसी ही है जैसी कि इस शेर में बयान की गयी है। कवियों और शायरों की फ़ेहरिस्त में, जो कि वैसे भी काफ़ी लम्बी है, अपना नाम दर्ज कराने की ज़ुर्रत कर रहा हूँ, डरते-डरते।

मुझे नहीं पता मैं शायर हूँ या नहीं, मुझे यह भी नहीं पता कि शायर कहलाने के लिए किन शर्तों को पूरा करना लाज़िम है, पर हाँ...ये ज़रूर है कि दिलो-दिमाग़ में उमड़ने-घुमड़ने वाले जज़्बात और ख़याल, या अपने इर्द-गिर्द होने वाली घटनाओं और हादसों पर मेरी प्रतिक्रियाएँ जब कविताओं, ग़ज़लों और नज़्मों की शक्ल लेने लगीं तो फिर लिखने का एक सिलसिला बदस्तूर चल निकला, जो जारी है।

दस्तूर ये है कि ऐसे मौक़े पर मैं अपने बारे में कुछ कहूँ, ख़ास तौर पर तब जब कि ये मेरी पहली कोशिश है, अपनी कविताओं को आपके सामने लाने की।

पेशे से मैं इंजीनियर हूँ। जीवन के छत्तीस साल भारत की सबसे बड़ी, कार और ट्रक बनाने वाली कम्पनी में काम किया, पर साहित्य और अदब की ओर शुरू से मेरा रुझान था। पढ़ने का मुझे नशा है, चाहे वो कहनियाँ हों, उपन्यास हों या लेख। कविताओं में मुझे संगीत सुनायी देता है और उर्दू शायरी से मुझे इश्क़ है।

मुझे लगता है कि किसी नए रचनाकार के लिये इससे ज़्यादा परिचय देने की कोई ख़ास ज़रूरत नहीं है। रचनाकार की असली पहचान होती हैं उसकी रचनायें, जिसमें उसकी संवेदनाएँ होती हैं, उसके विचार होते हैं, उसके जज़्बात होते हैं जिन्हें वो महसूस करता है और उसका नज़रिया होता है, दुनिया को और दुनिया में जो हो रहा है, उसे देखने का। रचनाएँ ही किसी रचानकार की सही पहचान होती हैं।

पिछले कुछ सालों में मैंने छोटी-बड़ी, कुछ अधूरी, कुछ पूरी, क़रीब सौ के लगभग कवितायें लिखी होंगी। कुछ कहानियाँ भी लिखी हैं और कुछ अंग्रेज़ी की कहानियों के हिंदी में अनुवाद किए हैं। इनके अलावा पिछले चार सालों में मुझे NETFLIX के अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं के धारावाहिकों और फ़िल्मों के संवादों का हिंदी में अनुवाद करने का मौक़ा भी मिला जो मेरे लिए एक नया ही अनुभव रहा। कुछ तो उनमें काफ़ी लोकप्रिय भी हुए।

मेरी कवितायें यहाँ-वहाँ बिखरी पड़ी थीं जिन्हें मैने समेटने की कोशिश की है। कुछ तो गुमशुदा ही हैं, मिली नहीं। जो मिलीं उन्हीं में से कुछ रचनाओं को इस संकलन में आपके सामने पेश कर रहा हूँ। इनमें कुछ को ग़ज़ल के ढाँचे में लिखने की कोशिश की है और कुछ कविताओं या नज़्मों के रूप में हैं।

इंसान के जीवन के कई पहलू होते हैं। जीवन के इन्हीं अलग-अलग पहलुओं पर मेरी रचनाएँ हैं; कुछ ख़ुशी की, कुछ ग़म की, कुछ दर्द की, कुछ एकाकीपन की, कुछ तल्खियों की, कुछ में आज के हालात पर तंज है, और हाँ.. कुछ रोमांस की भी हैं।

इस बीच कोविड के दो साल बहुत डरावने थे। उन दिनों जो कुछ समाज और व्यक्ति पर, ख़ास तौर पर साधारण व्यक्ति पर बीता उसके कुछ पहलुओं पर भी मेरी प्रतिक्रियाएँ हैं। देश में इधर जो कुछ हुआ या हो रहा है उस पर भी अपने विचार और प्रतिक्रियाएँ इन रचनाओं में मैंने व्यक्त करने की कोशिश की है।

अगर इनमें से किसी शेर ने कहीं आपके मन को छुआ, या कोई भी मेरी कविता या उसका कोई भी अंश आपको भाया तो मैं समझूँगा कि मेरी कोशिश कामयाब हुई ।

अब और क्या कहूँ? जो है, जैसा है,आपके सामने है। अपने ही एक शेर के साथ बात को समाप्त करते हुए इसे अपने पाठकों को समर्पित करता हूँ:

“जैसे गंगा में बहाया हो कोई दिया
मैं ये अशआर अपने पेश करता हूँ।”

दिलीप त्रिवेदी
मुंबई
Deekay.on.09@gmail.com

इबादत

भोर की लाली में, क़ुदरत की दीवाली में,
फूलों में, पत्तों में, लचकती डाली में,
खेतों में, बगीचों में, गेहूँ की बाली में,
मैंने तुझे देखा है।
लहरों की उठान में, पर्वत की शान में,
परिंदों की,तितलियों की उड़ान में,
गीतों की तान में, बच्चे की मुस्कान में,
मैंने तुझे देखा है।
मुझे क्या काम काशी से, काबे से, कलीसे से,
क़ुदरत के हर ज़र्रे में तेरे नूर को देखा है।
मैंने तुझे देखा है॥

कलीसा = गिरजाघर